ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' में त्रासदीय यथार्थ

डॉ. नंदिनी चौबे सहायक प्राध्यापक, हिंदी रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरू
Email – dr.nandinichaubey@gmail.com

सार – भीष्म साहनी का 'तमस' भारत – विभाजन की मानवीय त्रासदी पर केंद्रित उपन्यास है। 'तमस' उपन्यास में भीष्म साहनी ने विभाजन के दौरान हुई अनेक घटनाओं को उसी रूप में प्रस्तुत किया है जिस रूप में उन्होंने वास्तव में देखा था। देश के विभाजन तथा उसके बाद होने वाले दंगों और उस समय की राजनीति का जीता – जागता चित्रण इस आलेख में देखने को मिलता है। भीष्म साहनी ने अँग्रेजी पात्र के माध्यम से अँग्रेजी कूटनीति को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों के बीच नफरत, संदेह और द्वेष की भावना फैलाकर राजनीतिक दलों ने किस प्रकार अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश की। इन सभी विषयों पर इस आलेख में चर्चा की गई है। इस आलेख में यह भी बतलाने की कोशिश की गई है कि तनाव की स्थिति गाँवों, कस्बों और शहरों तक महामारी की तरह फैलने लगती है। फिर वही तनावपूर्ण संवादहीनता की स्थिति ही धीरे – धीरे साम्प्रदायिक दंगे के रूप में भड़क उठती है। साम्प्रदायिकता का जहर इस हद तक सबके मन में भरा हुआ था कि जिस भी धर्म के लोगों को अवसर मिलता, वे विरोधी धर्म के लोगों पर आक्रमण करने से चूकते नहीं थे। इस तरह के हिंसात्मक प्रक्रिया से लोग काफी भयभीत हो गए थे। इन सभी विषयों पर विस्तारित रूप से इस आलेख में बतलाने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द – तमस, साम्प्रदायिक, विभाजन, भीष्म साहनी।

आधुनिक हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक ऐसे जाने – माने साहित्यकार हुए जिन्होंने हिंदी साहित्य की कई विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही साथ आज़ादी के संग्राम की वैचारिक सच्चाई, देश – विभाजन की पीड़ा और अमानवीयता का जीता – जागता चित्रण करके आज़ाद होने के लिए चुकाई जाने वाली भारी कीमत का संकेत दिया है। भीष्म साहनी उनमें सबसे पहले दर्जे के लेखक साबित होते हैं। भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के एक महान कथाकार तथा साहित्यकार थे।

भीष्म साहनी का 'तमस' भारत – विभाजन की मानवीय त्रासदी पर केंद्रित उपन्यास है। 'तमस' का अर्थ 'अंधकार' होता है। भारत विभाजन के समय की साम्प्रदायिक विभिषिका, रक्तपात, हिंसा और उन्माद के साथ ब्रोटिश उपनिवेशवादी षडयंत्रों और साम्राज्यवादी नीतियों के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में 'तमस' उपन्यास को देखा जा सकता है। यह उपन्यास 1973 में 260 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है। इसकी कथा का आधार भारत – पाक विभाजन है। इसे 1970 में 'साहित्य अकादमी' द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है।

'यथार्थ' का शाब्दिक अर्थ है – जो जिस रूप में है वैसा ही दिखाई देना। अत: 'त्रासदीय यथार्थ' से अभिप्राय है ऐसी त्रासदी, जो जिस रूप में घटित हुई है उसको वैसे ही प्रस्तुत करना। 'तमस' उपन्यास में भीष्म साहनी ने विभाजन के दौरान हुई अनेक घटनाओं को उसी रूप में प्रस्तुत किया है जिस रूप में उन्होंने वास्तव में देखा था। "रावलपिंडी में जहाँ हमारा घर था, वह हिंदुओं और मुसलमानों की मिली-जुली आबादी थी। मैंने साम्प्रदायिक दंगे अपनी आँखों से देखे हैं।"[1]

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

उपन्यास दो भागों में विभक्त है। इसके पहले भाग में रावलपिंडी शहर की घटनाओं का चित्रण किया गया है और दूसरे भाग में सैयदपुर, खानपुर, नूरपुर आदि गाँवों में हुए फसाद का चित्रण किया गया है। उपन्यास के आरम्भ में ही उपन्यासकार भावी तमस का संकेत देते हैं, जिसका अर्थ – अंधकार है। "आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली।"[2]

विभाजन की त्रासदी पर एक से बढ़ कर एक कृतियाँ सामने आईं पर भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' सबसे अलग है। यह एक ऐसी कृति है जिसका नाम भारतीय साहित्य के इतिहास में अमर रहेगा। देश के विभाजन तथा उसके बाद होने वाले दंगों और उस समय की राजनीति का जैसा चित्रण इस उपन्यास में हुआ है, वैसा शायद ही किसी अन्य कृति में हुआ हो। विभाजन को लेकर यशपाल का उपन्यास 'झूठा सच' और राही मासूम रजा का उपन्यास 'आधा गाँव' भी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं, लेकिन 'तमस' उस समय के अंधेरे की जितनी परतों को खोलता है और सच्चाई को जिस तरह उसकी सम्पूर्णता में प्रस्तुत करता है, वैसा किसी अन्य कृति में देखने को नहीं मिलता है। यही कारण है कि भीष्म साहनी का यह उपन्यास सबसे ज्यादा लोकप्रिय हुआ। 1986 में प्रसिद्ध फिल्मकार गोविंद निहलानी ने इस पर टीवी सीरियल भी बनाया, जिसमें खुद भीष्म साहनी ने भी अभिनय किया। यह उपन्यास सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले हिंदी उपन्यासों में एक है।

'तमस' की पृष्ठभूमि में देश के विभाजन की वे घटनाएँ हैं, जिनमें लाखों बेगुनाह लोग जो अलग – अलग धर्मों को मानने वाले थे या तो मारे गए या बेघर हो गए। औरतों ने अपनी आत्मरक्षा के लिए कुएँ में कूदकर अपनी जान दीं तथा उनकी लाशें फूल – फूल कर ऊपर आने लगीं। कई माँओं के बच्चे मर गए। कई बूढ़े बेसहारा हो गए। इन सबके बीच हिंदुओं, मुसलमानों और सिखों के बीच नफरत, संदेह और द्वेष की भावना फैलाकर राजनीतिक दलों ने अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश की। यह तमाम बातें अपने आप में कितना त्रासद है।

'तमस' उपन्यास के आरम्भ में हमारा परिचय नत्थू से होता है जो एक बदरंग, कँटीले और तोंदियल सूअर को मारने की लम्बी, उबाऊ और थका देने वाली प्रक्रिया संलग्न है। मुरादाली नामक कमेटी के कारिन्दे ने पाँच का एक नोट उसकी जेब में डालते हुए यह काम उसे सौंपा था – "हमारे सलोतरी साहिब को एक मरा हुआ सूअर चाहिए, डाक्टरी काम के लिए। - इधर पिगरी में सूअर बहुत घूमते हैं। एक सूअर को इधर कोठरी के अंदर कर लो और उसे काट डालो।"[3] बाद में वही सूअर मस्जिद के सामने फेंकवा दिया जाता है। इस कर्मकांड का सूत्रधार कौन है, यह बाद में उद्घाटित होता है। मस्जिद में सूअर का शव देखकर मुसलमान उत्तेजित हो जाते हैं। फिर एक गाय की हत्या हो जाती है। हिंदू भी भड़क उठते हैं। पूरे माहौल में एक तनावपूर्ण संवेदनहीनता व्याप्त हो जाती है। अफवाहें और खुसर – फुसर करती हुई कानाफूसियाँ हवा में फैलने लगती है। संदेह, अविश्वास, असुरक्षा के भाव जोर पकड़ लेते हैं। तनाव की यह स्थिति गाँवों, कस्बों और शहरों तक महामारी की तरह फैलने लगती है। यही तनावपूर्ण संवादहीनता की स्थिति ही धीरे – धीरे साम्प्रदायिक दंगे के रूप में भड़क उठती है। दोनों तरफ से घात – प्रतिघात, हिंसा – प्रतिहिंसा आदि की क्रियाओं – प्रतिक्रियाओं द्वारा ही दंगा एक वीभत्स और अमानवीय नरसंहार में बदल जाता है। "किसी धर्म को भड़काने वाला कारण चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, दूसरे धर्म के लोग उसका बदला लेने के लिए उतावले होकर तुरंत कार्रवाई करते हैं।"[4]

साम्प्रदायिकता के अंधेरे में डूबे वे दिन, लहूलुहान हजारों बेगुनाह लोग, सूअर और गाय को बचा लेने का पुण्य और उसी के लिए होती हुई हत्याएँ आदि प्रस्तुत कर भीष्म साहनी जी ने यथार्थ को उजागर कर दिया है। "उपन्यास में सूअर की हत्या के साथ ही साम्प्रदायिक सद्भावना का यह दीया बुझ जाता है और सामान्य जीवन झगड़ों के गहरे

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

तमस से घिरने लगता है ।"[5] अँग्रेज़ों द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालने और राज करने की कूटनीति सफल हुई और सदियों से एक साथ रहते आ रहे लोग एक दूसरे की जान के दुश्मन बन गए ।

रिचर्ड अँग्रेजी साम्राज्य का पुर्जा है । वह जानता है कि साम्राज्य का हित है कि भारत में अशांति हो, हिंदु – मुस्लिम परस्पर लड़े । इसलिए वह अशांति और गड़बड़ को रोकने की क्षमता और सूझबूझ रखने पर भी जान – बूझकर निष्क्रिय रहता है । अँग्रेज जानते थे कि यदि हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता बनी रहेगी तो उनकी जड़ें हिल जाएँगी । भीष्म साहनी ने अँग्रेजी पात्र के माध्यम से अँग्रेजी कूटनीति को यथार्थ रूप में चित्रित किया है ।

साम्प्रदायिकता क्या है ? "साम्प्रदायिकता एक राजनीति है । किसी सम्प्रदाय को धार्मिक संगठन का रूप देना ही साम्प्रदायिकता है ।"[6] साम्प्रदायिकता एक सामाजिक व्यवस्था में रची मानसिकता से उत्पन्न होती है । पंद्रह साल के रणवीर के युवा मन की रचना ऐसे ही परिवेश में हुई थी । यथा रणवीर की आँखों के सामने बार – बार म्लेच्छ घूम जाते थे । "पड़ोस के किनारे बैठा मोची म्लेच्छ है । घर के सामने टाँगा हाँकने वाला गाड़ीवान म्लेच्छ है, मेरी कक्षा में पढ़ने वाला हमीद म्लेच्छ है, गली में मंजीफा माँगनेवाला फकीर म्लेच्छ है, पड़ोस में रहने वाला परिवार म्लेच्छ है ।"[7]

साम्प्रदायिकता का जहर इस हद तक सबके मन में भरा हुआ था कि जिस भी धर्म के लोगों को अवसर मिलता, वे विरोधी धर्म के लोगों पर आक्रमण करने से नहीं चूकते थे । जो कभी एक दूसरे के मकान बनाने में सहयोग किया करते थे, वे खुद मकान जलाने वालों में शामिल हो गए थे । "चारों ओर हा-हाकार मची थी । लपलपाती आग की लपटें अब दो जगह से उठने लगी थीं । ढलान पर, मकानों की दीवारों पर, गली के ईंटों के फर्श पर लपटों के साए नाच रहे थे । घरों के किवाड़ तोड़ने की आवाज़ें आने लगी थीं ।"[8]

इस तरह के हिंसात्मक प्रक्रिया से लोग इतने भयभीत हो गए थे कि दंगे होने के बाद एक लहर – सी चल पड़ी कि जिस इलाके में मुसलमानों की संख्या ज्यादा थीं, वहाँ से हिन्दू और सिख निकलने लगे और जिस इलाके में हिन्दुओं और सिखों की संख्या ज्यादा थी वहाँ से मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग अपना घर – बार छोड़कर दु:खी मन से चलने लगे । "अब हिन्दुओं के मुहल्ले में न तो कोई मुसलमान रहेगा और न मुसलमानों के मुहल्ले में कोई हिन्दू । इसे पत्थर की लकीर समझो । पाकिस्तान बने या न बने, अब मुहल्ले अलग – अलग होंगे ।"[9] इस प्रकार 'तमस' उपन्यास विभाजन के कारणों और परिणामों से उत्पन्न त्रासदी को जीवंत रूप में प्रस्तुत कर यथार्थ का चित्रण पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है ।

उपर्युक्त विवेचन से 'तमस' उपन्यास में निहित भीष्म साहनी जी का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू – मुस्लिम साम्प्रदायिक संकीर्णताओं एवं तनाव का यथार्थपरक चित्रण करने के लिए ही उन्होंने इन परिस्थितियों एवं समस्याओं को चित्रित किया है । भीष्म साहनी ने स्वयं विभाजन के दौरान रंगों को प्रत्यक्ष रूप से देखा था और यथार्थ घटना को उपन्यास के माध्यम से त्रासदीय रूप में चित्रित किया है । देश का बँट जाना विश्व के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है, जिसे भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास में अनेक घटनाओं के माध्यम से चित्रित किया है । अत: धार्मिक अंधता के कारण होने वाले साम्प्रदायिक दंगों के परिणामों को हमारे सामने रखना ही उनका मुख्य उद्देश्य था ।

संदर्भ –

1) राजेश्वर सक्सेना, भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना, पृ. – 10-11

2) तमस – भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, पृ.- 7

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.03, May : 2023

3) तमस – भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रयुक्त संस्करण – 1995, पृ.- 69

4) हेमराज निर्मम, हिंदी कथासाहित्य में भारत – विभाजन, संजय प्रकाशन, अशोक विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ.- 66

5) डॉ. जोगिन्द्र संधू, भीष्म साहनी के उपन्यासों में त्रासदी, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, पृ.- 59

6) 'दस्तक' पत्रिका, 5 अक्टूबर 1994, पृ.- 54

7) तमस – भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 1973, प्रयुक्त संस्करण – 1995

8) तमस – भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संसकर्ण, पृ.- 238

9) वही, पृ.- 237

Copyright @ 2023 Author